प्रचय (प्र), सन्नतर (स), ।
अनुदात्त ३, उदात्त १, स्वरित २ ।

५ प्रश्न:- सामगान की दृष्टि से स्वर मण्डल की क्या व्यवस्था है?

उत्तर:- सामगान की दृष्टि से स्वर मण्डल की व्यवस्था षड् विकार के रूप में है।

विकार, विश्लेषण, विकर्षण, अभ्यास, विराम तथा स्तोम।

१- विकारो यथा "अग्ने" इत्यस्य "ओग्नायि" इति।

२. विश्लेषण यथा "वीतये" इत्यस्य "वोयि तोया २ यि" इति।

३. विकर्षण यथा "ये" इत्यस्य "या २ ३ यि" इति।

४. अभ्यास इति पुन: पुनरुच्चारो "तो या २ यि तोया २ यि" इति।

५. विरामो यथा "गृणानो हव्यदातये" इत्यस्य "गृणानोह् । व्यदातये" इति। "गृणानोह" इत्यस्य पदान्त स्वभावऽपि गान सौकर्यार्थं शब्द मध्य एव विरामादस्य विराम संज्ञा भवति।

६. स्तोम ऋग्विलक्षण वर्णा यथा "औ हो वा" इति।

६. प्रश्न:- ऋग्वेद तथा सामवेद का स्वराङ्कन एक मन्त्र में किस प्रकार होगा?

उत्तर:- ऋग्वेद तथा सामवेद का स्वराङ्कन एक ही मंत्र में निम्नलिखित प्रकार से होगा।

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ ऋग्वेदीय स्वराङ्कन ॥

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ सामवेदीय स्वराङ्कन ॥

७. प्रश्न:- साम स्वरों का प्रयोग कैसे होता है?

उत्तर:- साम स्वरों का प्रयोग निम्नलिखित प्रकार से होता है।

अग्निमीळे पुरोहितम्
अ उ स्व प्र अ उ स्व प्र
नी सा रे रे नी सा रे रे

ओ३म्

१. प्रश्न :- सामवेद क्या है?

उत्तर :- "गीतिषु सामाख्या" । (जै० सू० २/१/३६) ।
गीतिषु अर्थात् गाये जाने वाले मन्त्रों की साम संज्ञा है।
गाये जाने वाले मन्त्रों के समूह का नाम सामवेद है।

२. प्रश्न :- साम वेदोक्त स्वर मण्डल कितना है?

उत्तर :- सप्त स्वराः त्रयो ग्रामाः मूर्च्छनास्त्वेक विंशतिः।
तानाः एकोनपञ्चाशत इत्येतत्स्वरमण्डलम्
(नारदीय शिक्षायाम्)
सात स्वर, तीन ग्राम (प्रत्येक स्वर के तीन ग्राम) तथा २१ मूर्च्छना हैं। सब मिलकर ४९ स्वर मण्डल हैं।

३. प्रश्न :- सामवेद में गाने के लिये स्वरों का क्या क्रम है?

उत्तर :- सामवेद में गाने के लिये निम्नलिखित स्वरों का निम्नलिखित प्रकार है।
मध्यम, गान्धार, ऋषभ, षड्ज, निषाद, धैवत तथा पञ्चम।

४. प्रश्न :- सामवेद में उच्चारण की दृष्टि से स्वराङ्कन का क्या क्रम है?

उत्तर :- सामवेद में उच्चारण की दृष्टि से स्वराङ्कन का क्रम निम्नलिखित प्रकार है।
उदात्त (उ), अनुदात्त (अ), स्वरित (स्व)